सम्पादक के नाम

भारत को सिर्फ बेरोज़गारों की एक भीड़ में तब्दील होने से बचाना होगा !

नोबेलजयी अर्थशास्त्री पॉल क्रुगमैन ने भारत के बारे में जो डरावनी भविष्यवाणी की है, वह किसी भी देशप्रेमी के रौंगटे खड़े कर देने के लिये काफी है । उन्होंने कहा है कि इस बात की पूरी आशंका है कि भारत बेरोज़गार नौजवानों की महज एक भीड़ बन कर रह जायेगा ।

क्रुगमैन का यह कहना कोई आधारहीन कल्पना नहीं है । उन्होंने कृत्रिम बुद्धि के वर्तमान युग में सिर्फ सेवा क्षेत्र के जरिये आर्थिक विकास को जारी रखना नामुमकिन बताया है । आगे सेवा क्षेत्र के अधिकांश काम कृत्रिम बुद्धि के उपकरणों के जरिये होने लगेंगे । यदि विनिर्माण (manufacturing) की अभी की तरह की अवहेलना जारी रही तो फिर भविष्य के भारत में सिर्फ बेरोज़गार पैदा होंगे । आर्थिक विकास की दर पूरी तरह से थम जायेगी ।

यह सच है कि आरएसएस और भाजपा को बढ़ते हुए बेरोज़गारों के हुजूम में निश्चित तौर पर अपना राजनीतिक भविष्य दिखाई देता होगा । दंगाइयों, गोगुंडों, रोमियो स्कैवड, अफ़वाहबाजों, आईटीसेल के ऑनलाइन गुंडों, हत्यारों, बलात्कारियों और षड़यंत्रकारियों की अपनी फ़ौज को तैयार करने का इससे अच्छा कच्चा माल और कहाँ मिलेगा । समाज के सारे स्तरों के उच्छिष्ट और विवेकहीन अवसरवादी पशुओं को पहले से ही वे अपने यहाँ जमा करते रहे हैं । मोहन भागवत जिस फ़ौज को तीन दिनों में तैयार कर लेने की हुंकार भर रहे थे, वह इन तत्वों की ही फ़ौज तो हैं !

बहरहाल, कांग्रेस दल के महाधिवेशन में अपने भाषण में राहुल गांधी ने बेरोज़गारी को भारत की केंद्रीय समस्या के रूप में चिन्हित करके विनिर्माण के क्षेत्र के विस्तार पर जिस प्रकार बल दिया है, वह थोड़ा आश्वस्तकारी है । इसके साथ ही राष्ट्र की समस्याओं के समाधान के लिये ग़ैर-कांग्रेस दलों के लोगों को भी एक मंच पर सामने आने का उनका आह्वान बेहद समीचीन और जरूरी है । परिस्थितियों को फासिस्टों के हाथ में बिगड़ने के लिये यूँ ही छोड़ा नहीं जा सकता है । राष्ट्र को भविष्य की एक नई दिशा पकड़नी होगी ।

- अरुण माहेश्वरी

इनमे से एक हिन्दू है दूसरा मुस्लिम!

अभी गोवा के मुख्यमंत्री मनोहर पारीक साहब और हिन्दी फिल्मों के अभिनेता इरफान खान बीमार हुए और भारत मे पर्याप्त ईलाज न होने के कारण विदेश रवाना हो गये , इनमे से एक हिन्दू है दूसरा मुस्लिम।

भारत में न मन्दिरों की कमी है न मस्जिदों की। दुनिया के सबसे शक्तिशाली ईश्वर शायद भारत में ही होंगे, फिर यह लोग ईलाज कराने विदेश क्यों गये? क्या पारिकर साहब को हिन्दू देवी-देवताओं ओर इरफान खान को अल्लाह पर भरोसा नहीं था कि उनकी कृपा से वो ठीक हो जाएंगे।

जी हां यह एक सच है कि शरीर में रोगों का इलाज विज्ञान द्वारा होता है और भारत विज्ञान के क्षेत्र में पिछड़ा है वरना इनको विदेश नहीं जाना पड़ता। दुसरा मनोहर पारिकर और इरफान खान भारत के पैसे वाले लोग है, या यों कहे इनका धर्म कुछ भी हो लेकिन इनका वर्ग एक है। पूंजीपति वर्ग पैसे वाले लोग कुछ भी कह लीजिए इनको दुख तकलीफ होती है तो यह पैसे वाले लोग विदेश चले जाते हैं लेकिन आम भारतीय क्या करे? अगर हम लोगो को ऐसी बीमारी हो गयी तो हमारा मरना तय है, और बहाना होगा समय पूरा हो गया।

दरअसल अच्छे अस्पताल अच्छे स्कूल इनकी ओर वैज्ञानिक दृष्टिकोण इनकी जरूरत आम आदमी को ज्यादा है, लेकिन यह पैसे वाले हमें मन्दिर मस्जिद में बाटकर खुद विदेश चले जाते हैं। अगले चुनाव में अपने लिए अच्छे और सस्ते अस्पताल तथा स्कूल रोजगार मंगियेगा------ मन्दिर मस्जिद गुरद्वारे नही।

-कोलंबा कालीधर

छल से नहीं दबेगा बेरोज़गारी का दावानल!

मोदी सरकार के स्किल इंडिया कार्यक्रम का इससे बड़ा छल क्या हो सकता है कि भारतीय रेल ने जिन हज़ारों नौजवानों को खुद चुनकर एप्रेन्टिसशिप की ट्रेनिंग दी, उनमें से केवल 20 प्रतिशत को ही वह नौकरी देने को तैयार है। आखिर बाकी 80 प्रतिशत कहां जाएंगे? क्या भारत में दूसरी भी कोई रेलसेवा है?

यह भी गौरतलब है कि रेलवे ने ग्रुप-सी व डी के खाली पड़े 90,000 पदों के लिए आवेदन मांगे हैं। इसके लिए आवेदन करने की अंतिम तिथि 31 मार्च है। लेकिन 18 मार्च तक ही करीब डेढ़ करोड़ आवेदन आ चुके थे। 31 मार्च तक यह संख्या आराम से 2 करोड़ तक पहुंच सकती है। यानी, एक पद के लिए 222 लोग दौड़ में लगे हैं और एक को नौकरी मिल भी गई तो 221 बेरोज़गार (99.55त्न) रह जाएंगे। क्या ऐसे में देश में मात्र 6.03त्न बेरोज़गारी दर का आंकड़ा मज़ाक नहीं लगता!

- अनिल सिंह

विश्व कहानी दिवस (20 मार्च)

सोना-जागना / खलील जिब्रान

जिस शहर में मैं पैदा हुआ, उसमें एक औरत अपनी बेटी के साथ रहती थी। दोनों को नींद में चलने की बीमारी थी।

एक रात, जब पूरी दुनिया सन्नाटे के आगोश में पसरी पड़ी थी, औरत और उसकी बेटी ने नींद में चलना शुरू कर दिया। चलते-चलते वे दोनों कोहरे में लिपटे अपने बगीचे में जा मिलीं।

माँ ने बोलना शुरू किया, आखिरकार आखिरकार तू ही है मेरी दुश्मन! तू ही है जिसके कारण मेरी जवानी बरबाद हुई। मेरी जवानी को बरबाद करके तू अब अपने-आप को सँवारती, इठलाती घूमती है। काश! मैंने पैदा होते ही तुझे मार दिया होता। इस पर बेटी बोली, अरी बूढ़ी और बदजात औरत! तू तू ही है जो मेरे और मेरी आज़ादी के बीच टाँग अड़ाए खड़ी है। तूने मेरी ज़िन्दगी को ऐसा कुआँ बना डाला है जिसमें तेरी ही कुण्ठाएँ गूँजती हैं। काश! मौत तुझे खा गई होती।

उसी क्षण मुर्गे ने बाँग दी। दोनों औरतें नींद से जाग गईं।

बेटी को सामने पाकर माँ ने लाड़ के साथ कहा, यह तुम हो मेरी प्यारी बच्ची?

हाँ माँ। बेटी ने मुस्कराकर जवाब दिया।

- साईबर नजर

फेसबुक आपको बेच रहा है... हर समय आप बिक रहे हैं

गिरीश मालवीय

नई दिल्ली - जब अमेरिका और यूरोपियन यूनियन के तमाम देश सोशल मीडिया की सबसे बड़ी साइट फेसबुक का डेटा लीक होने पर बहस कर रहे थे, तब अचानक भारत में भी उस पर बहस शुरू करवा दी गई जबकि भारत में उस समय इराक में मारे गए 39 भारतीयों, तमाम बैंक घोटालों और लोकसभा में सरकार के खिलाफ आने वाले अविश्वास प्रस्ताव पर बहस हो रही थी। केंद्रीय कानून मंत्री रविशंकर प्रसाद ने बयान दिया कि अगर भारत के लोगों का डेटा लीक हुआ तो इसके मालिक मार्क जुकरबर्ग को भारत में तलब कर लिया जाएगा। भारत के गोदी मीडिया ने फौरन इस बयान को लपका और जबरन इस पर बहस शुरू करवा दी गई। सारे मुद्दे दफन हो गए।

अमेरिका से भारत पहुंचा एक मुद्दा

दरअसल, यह रहस्य अब खुला है कि फेसबुक का डेटा लेकर कैम्ब्रिज एनलिटिका ने पिछले अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में डोनाल्ड ट्रंप की मदद की थी। तब बड़े पैमाने पर फेसबुक के डेटा की चोरी कर या खरीदकर कैम्ब्रिज एनलिटिका ने यह खेल रचा था। भारत में भी कैम्ब्रिज एनलिटिका का दफ्तर है और जेडीयू नेता व दिग्गज राजनीतिक खिलाड़ी के. सी. त्यागी का बेटा कैम्ब्रिज एनलिटिका की भारतीय शाखा का प्रमुख है। यह माना जा रहा है कि कैम्ब्रिज एनलिटिका ने भाजपा, कांग्रेस व कुछ अन्य दलों से हाल ही में संपर्क उन्हें 2019 में अमेरिका जैसा डेटा उपलब्ध कराने की पेशकश की है। अमेरिका में जब यह भेद खुला तो उसकी आंच भारत में भी पहुंची और भाजपा ने तमाम मुद्दों से नजर हटाने के लिए बिना सोचे समझे कांग्रेस को इस विवाद में घसीट लिया। लेकिन असलियत यह निकली की कैम्ब्रिज एनालिटिका से अगर किसी पार्टी का संबंध और संपर्क है तो वह भाजपा ही है।

या तो सरकार मूर्ख है या फिर जनता

सिर्फ फेसबुक ही नहीं बल्कि सोशल मीडिया की किसी भी साइट मसलन ट्विटर, लिंक्डेन, इंस्टाग्राम, वाट्सऐप, प्रिंटरेस्ट, रेडडिट, स्टंबल अपान आदि को इस्तेमाल करने वाला हर उपयोगकर्ता इस बात को जानता है कि वह जितना भी अपने बारे में जानकारी सोशल मीडिया पर दे रहा है, सब में खतरा है। भारत में ऐसे लोगों की संख्या कम ही है जिन्हें यह नहीं पता कि फेसबुक समेत तमाम सोशल मीडिया साइट पर अपने बारे में कोई भी जानकारी देना खतरे से खाली नहीं है।

चोरी छिपे नहीं, सीनाजोरी का धंधा

फेसबुक, ट्विटर, लिंक्डेन, इंस्टाग्राम, वाट्सऐप, गूगल, याहू आदि दरअसल डेटा बेचकर बहुत ज्यादा कमाई कर रहे हैं। आपको बेशक इन सभी साइटों पर अपना एकाउंट मुफ्त में बनाने का मौका है, लेकिन जैसे ही आप खुद को रजिस्टर्ड करते हैं, आपका डेटा तैयार हो जाता है और आपके साइट बिहैवियर के मुताबिक उस डेटा को बेच दिया जाता है। साइट बिहैवियर का मतलब है कि आप किसी सोशल मीडिया साइट पर किस तरह की चीजों को बार-बार सर्च करते हैं, क्या खाना पसंद करते हैं, क्या पहनना पसंद करते हैं, कार कौन सी पसंद है, कहां घूमना पसंद करते हैं आदि आप जितना सर्च करेंगे, यह सब कुछ उन साइट्स पर आपकी प्रोफाइल में जुड़ता चला जाएगा। फिर आपकी पहचान एक डेटा में बदल जाएगी और वह डेटा उन सभी क्षेत्रों में काम करने वाली कंपनियों को बेच दिया जाएगा। यह डेटा लेने के बाद आप के दिमाग पर अप्रत्यक्ष रूप से उस उत्पाद के बारे में बार-बार जानकारी देकर आपको उसके बारे में सोचने पर मजबूर किया जाएगा। यह धंधा आज से नहीं हो रहा है, बल्कि सोशल मीडिया साइट जिस दिन खड़ी की जाती है, उस दिन से ही डेटा जुटाने का काम शुरू हो जाता है।

यह तो सोशल मीडिया साइट्स की बात है। अगर आप किसी न्यूज वेबसाइट या ब्लॉग पर जाकर टिप्पणी करते हैं तो भी आपके बारे में सूचना उस वेबसाइट मालिक या ब्लॉग मालिक के पास पहुंच जाएगी। यह उसके ऊपर है कि वह किस तरह आपकी सूचना का इस्तेमाल करे। बहुत सारी न्यूज वेबसाइट या ब्लॉग आपके ईमेल पर अचानक जो सूचनाएं भेजने लगते हैं, वह यही है।

मोदी और फेसबुक

2014 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने अपने प्रचार में सोशल मीडिया साइट्स का जमकर इस्तेमाल किया था। भाजपा ऐसा पहला राजनीतिक दल है जिसने उस चुनाव में फेसबुक, ट्विटर और अन्य सोशल मीडिया साइट्स से प्राप्त डेटा को अपने संभावित वोटर के रूप में किया था। भाजपा को यह सलाह फेसबुक, गूगल और अन्य कंपनियों ने खुद दी थी। जिसके एवज में उन्हें इस पार्टी के विज्ञापन मिले।

यहां हम एक फोटो दे रहे हैं, जो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मार्क जुकरबर्ग की अमेरिका में हुई मुलाकात का है। प्रधानमंत्री बनने के बाद मोदी जब सबसे पहली बार अमेरिका गए तो वह फेसबुक के मुख्यालय भी पहुंचे थे। दोनों ने वहाँ जमा तमाम फ़ेसबुक कर्मचारियों व आमंत्रित लोगों को संबंधित किया और सवालों के जवाब भी दिए। ...तीसरे फ़ोटो को ज़्यादा ग़ौर से देखिए...ये हैं मार्क जुकरबर्ग के पैरंट्स जिनसे मोदी को मिलवाया गया। आप अपने पैरंट्स को किसी बड़ी हस्ती से तभी मिलवाता हैं जब आपको निकटता हासिल करनी होती है। मार्क इसके बाद भारत आया था और एयरटेल की मदद से नेट न्यूट्रील्टी का चक्कर चलाया था लेकिन भारी विरोध के चलते योजना सिरे नहीं चढ़ी क्योंकि तब नेट पर आप कौन सी साइट देखें यह फ़ेसबुक और एयरटेल मिलकर तय करते।

कैम्ब्रिज एनलिटिका का खेल भी जानिए

सब जगह आज कैम्ब्रिज एनलिटिका की चर्चा है आखिर ये कैम्ब्रिज एनलिटिका है क्या चीज ? फेसबुक को पूरी तरह समझने के लिए कैम्ब्रिज एनलिटिका का खेल भी समझना जरूरी है।

कैंब्रिज एनालिटिका कम्पनी डेटा एनालिसिस और डेटा माइनिंग का काम करती है। डेटा एनालिसिस करने वाली कंपनियां फेसबुक डेटा के जरिए यूजर्स की प्रोफाइलिंग करती हैं। यूजर के पर्सनल डेटा को ध्यान में रखकर उसकी राजनीतिक पसंद, नापसंद को देखते हुए उससे जुड़ी हुई पोस्ट ही दिखाती हैं। लंबे समय तक ऐसी पोस्ट देखने से व्यक्ति का झुकाव किसी भी राजनीतिक पार्टी की तरफ हो सकता है।

यानी ये कैंब्रिज एनालिटिका चुनावी रणनीति तैयार करने में राजनीतिक पार्टियों की मदद करती हैं।

अब ये समझिए कि ये विवाद कैसे शुरू हुआ...

इसी कम्पनी से जुड़े एक कर्मचारी ने नैतिकता को आधार बनाते हुए ये जानकारी सार्वजनिक करते हुए बताया था कि चुनावों को प्रभावित करने व ट्रंप को फायदा पहुंचाने के लिए उनकी फर्म ने फेसबुक के उपभोक्ताओं का डेटा इस्तेमाल किया था कहा जा रहा है कि वर्ष 2016 में अमरीका में राष्ट्रपति चुनाव के दौरान 5 करोड़ फेसबुक यूजर्स का निजी डेटा इस कम्पनी ने चुराया है।

अगर अमेरिका में यह होना संभव है तो भारत तो ऐसे डेटा चोरी के लिए बिल्कुल खुला पड़ा हुआ है फेसबुक के सबसे ज्यादा करीबन 20 करो? से अधिक यूजर भारत मे ही हैं ओर सबसे बड़ी बात तो यह हैं कि कि भारत में फेसबुक के 50 फीसदी से ज्यादा यूजर्स की उम्र 25 साल से कम है।

आज के युग को सोशल मीडिया का युग कहा जाय तो गलत नहीं होगा। ऐसे में हर कोई सोशल मीडिया पर आना चाहता है, विचारों के आदान-प्रदान के लिए फेसबुक सबसे आसान और सशक्त माध्यम है

हम सोशल मीडिया के विभिन्न माध्यमों जैसे फेसबुक, ट्विटर आदि के जरिए जो संवाद करते हैं, वह मास कम्युनिकेशन न होकर मास सेल्फ कम्युनिकेशन है। मतलब हम जनसंचार तो करते हैं लेकिन जन स्व-संचार करते हैं और हमें पता नहीं होता कि हम किससे संचार कर रहे हैं। या फिर हम जो बातें लिख रहे हैं, उसे कोई प? रहा या देख रहा भी होता हैं।

केम्ब्रिज एनलिटिका सरीखी डेटा माइनिंग करने वाली कम्पनिया ऐसे एक्टिव यूजर पर नजर बनाए रखती है और इसकी रिपोर्ट अपनी सेवाएं लेने वाले दल को प्रदान करती है। क्योकि यह माना जा रहा है कि सोशल मीडिया मतदाता के चुनावी व्यवहार को बहुत प्रभावित करता है ओर फेसबुक अब फेस और बुक तक ही सीमित नहीं रह गया है। बल्कि यह किसी भी व्यक्ति के चरित्र को चरितार्थ कर रहा है।

हमे यह समझना होगा कि आज के युग मे फेसबुक जैसे माध्यम इतने महत्वपूर्ण कैसे हो गए हैं कहते है जनसंचार यानी मास कम्युनिकेशन के क्षेत्र में एक थ्योरी काम करती है लोग जानकारी के लिए या विचारों के लिए सीधे जनसंचार के किसी स्रोत पर कम ही निर्भर रहते हैं यानी आप जब कोई खबर प?ते है या देखते है तो आप सीधे ही उस खबर पर विश्वास नही करते आप चाहते है कि कोई उस खबर को कंफर्म कर दे ऐसा अक्सर सरकारी नीतियों , योजनाओं , वादों के सम्बंध में देखने को मिलता है।

लोग अपनी जानकारी समाज के ही किसी और व्यक्ति से कन्फर्म करते हैं ओर वह व्यक्ति ओपिनियन लीडर बन जाता है जिसकी बात सुनी और कई बार मानी जाती है. इसे टू स्टेप थ्योरी कहते हैं।

आज के दौर में जब फेसबुक इतना महत्वपूर्ण हो गया है तो राजनीतिक दल जब सोशल मीडिया को भरपूर इस्तेमाल कर लेना चाहते हैं ओर उनका मकसद फेसबुक के माध्यम से इन ओपिनियन लीडर्स तक पहुंचना होता है। इसीलिए 30 हजार लोगो की पेड आईटी सेल बनाना भी राजनीतिक दलों को सस्ता सौदा लगता है,ताकि उसके जरिए यह समाज मे अपनी विचारधारा को आसानी से फैला सके।

कैम्ब्रिज एनलिटिका जैसी डेटा माइनिंग कम्पनिया यह बताती है कि लोगों को किस दिशा में मोड़ दिए जाना ज्यादा कारगर होता है , तभी आप देखते है कि सोशल मीडिया पर हिंदु मुस्लिम वाला मुद्दा हमेशा हॉट केक बना रहता हैं, इस खेल को समझना थो?ा मुश्किल जरूर है पर असम्भव नही है।

उपाय क्या है

फेसबुक या अन्य सोशल मीडिया साइटों से छुटकारा जल्द से जल्द पाइए। लेकिन अगर लत लग चुकी है और दलदल से निकलना चाहते हैं तो कभी भी अपनी सही जानकारी सोशल मीडिया पर हर्गिज न दें। खासकर अपनी सही जन्मतिथि, माता का नाम, फोन या मोबाइल नंबर तो कभी भी न तो प्रोफाइल में, न चैटिंग के दौरान और न टिप्पणी के दौरान...आप सोशल मीडिया का इस्तेमाल अच्छे विचारों को फैलाने के लिए करें।

कई कंपनियों ने फेसबुक पेज हटाया, बाजार में घबराहट, मची भगदड़

मोजिला, कॉमर्जबैंक, टेस्ला, स्पेसएक्स समेत कई बड़ी कंपनियों ने भी फेसबुक से फिलहाल किनारा कर लिया है। टेस्ला और स्पेसएक्स जैसी कंपनियों के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) एलन मस्क ने ट्विटर पर तीखी बहस के बाद अपनी कंपनियों का फेसबुक पेज बंद कर दिया है। उन्होंने ट्विटर पर लोगों से बहस के दौरान कहा था कि वह अपनी कंपनियों का फेसबुक पेज बंद कर देंगे। इसके बाद फेसबुक पर स्पेसएक्स और टेस्ला के पेज दिख नहीं रहे हैं।

फायरफॉक्स वेब ब्राउजर बनाने वाली कंपनी मोजिला ने कहा है कि हम फिलहाल फेसबुक से दूरी बना रहे हैं। हम फेसबुक को विज्ञापन देना अभी रोक रहे हैं और हमारे फेसबुक पेज पर अभी कुछ भी पोस्ट नहीं किया जाएगा।

जर्मनी के कॉमर्स बैंक ने भी कहा है कि वह फिलहाल फेसबुक विज्ञापन रोक रहा है और जानकारियों की सुरक्षा का मूल्यांकन कर रहा है। स्पीकर समेत अन्य इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद बनाने वाली कंपनी सोनोस ने भी फेसबुक समेत इंस्टाग्राम, गूगल और ट्विटर पर अपने विज्ञापन को एक सप्ताह के लिए रोक दिया है। इस बीच विवाद सामने आने के बाद इस सप्ताह कंपनी के शेयर 14 प्रतिशत गिरे हैं।